Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 19, Issue No. 4, July-2022, ISSN 2230-7540

महात्मा गाँधी के शैक्षिक विचारों का शिक्षा पर प्रभाव

Amit Kumar Yadav[1]*, Dr. Devendra Kumar[2]

[1] Research Scholar, Lords University, Alwar (Rajasthan)

[2] Associate Professor, Department of Education, Lords University, Alwar (Rajasthan)

सार - शिक्षा के प्रति इनकी विशेष सोच थी, जो कालान्तर में गांधीजी के शिक्षा दर्शन के रूप में जानी जाती हैं. वे शिक्षा के माध्यम से शोषण विहीन समाज का निर्माण करना चाहते थे. जहाँ किसी तरह जाति , वर्ग, लिंग का भेद न हो , सभी समरसता के साथ जी सके. उनका मानना था कि समाज के प्रत्येक सदस्य का शिक्षित होना जरुरी हैं , शिक्षा के बगैर एक आधुनिक समाज का सपना असम्भव ही हैं. गांधीजी का शिक्षा दर्शन बेहद व्यापक एवं जीवनोपयोगी हैं. उन्होंने शिक्षा के मुख्य सिद्धातों, उद्देश्यों तथा शिक्षा की योजना को मूर्त रूप देने का प्रयत्न किया. गांधीजी का आधुनिक शिक्षा दर्शन उन्हें समाज में एक शिक्षाशास्त्री का दर्जा दिलवाता हैं. उन्होंने बुनियादी शिक्षा के क्षेत्र में जो योगदान दिया , वह अद्वितीय था. हमारा लक्ष्य भारत के प्रख्यात पुरुषों एवं महिलाओं द्वारा शिक्षा के क्षेत्रा में दिए गए बीजगर्भित योगदान के बारे में जन जागरूकता के स्तर को ऊपर उठाने का प्रयत्न करना है। हमें उम्मीद है कि इस प्रकार की जागरूकता से संवाद और चर्चा की एक शृंखला सृजित होगी। आशा है कि राष्ट्रीय जीवन के इस महत्वपूर्ण आयाम में जनता के स्थायी योगदान को प्रोत्साहित करने के साथ-साथ यह शिक्षा को बौद्धिक जिज्ञासा का जीवंत विषय बनाएगा।

---------------------------------x---------------------------------

परिचय

महात्मा गांधी के शिक्षा दर्शन का अर्थ है मानव शरीर , मन और आत्मा का सर्वांगीण और सर्वोत्तम विकास। महात्मा गांधी के अनुसार शिक्षा वह है जो बच्चे के शरीर , मन और आत्मा का विकास करती है। गांधीजी का मानना है कि मानव जीवन का अंतिम लक्ष्य मुक्ति है , जिसका अर्थ है शारीरिक, मानसिक, आर्थिक, राजनीतिक और आध्यात्मिकता से मुक्ति। गांधीजी साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे, उनके अनुसार साक्षरता न तो अंत है और न ही शुरुआत, यह एक ऐसा साधन है जिसके द्वारा स्त्री-पुरुष शिक्षित होते हैं। गांधीजी मनुष्य को शरीर , मन और आत्मा तीनों का योग मानते हैं कि उनका विकास शिक्षा के माध्यम से होना चाहिए। उन्होंने को 3 में बदल दिया और मनुष्य या शिक्षा का कार्य न केवल 3त् बल्कि हाथ , मस्तिष्क और हृदय का विकास करना है। शिक्षा एक संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ है सीखना या सिखाना। शिक्षा हम किसी भी माध्यम से प्राप्त कर सकते हैं। शिक्षा मनुष्य को बौद्धिक रूप से तैयार करती है। इसी तरह आज के आधुनिक युग में ऑनलाइन शिक्षा प्राप्त करने का एक आसान तरीका है। आधुनिक समय में ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था एक वरदान के समान है। जिसने किसी कारणवश शिक्षा नहीं ली वह ऑनलाइन शिक्षा व्यवस्था से नए आयाम प्राप्त कर सकता है।

शिक्षा का अर्थ केवल साक्षर करना ही नहीं होता बल्कि उसे संशोधित, कर उसे एक पूर्ण मानव बनाना होता है। अब विवेचना इस तथ्य की होनी चाहिए कि क्या यह शिक्षा हमें मुकम्मल बना रही है? यदि नहींतो उसमें क्या परिवर्तन जरूरी हो गया है? आधुनिक शिक्षा का उनमे से 19वीं सदी में अंग्रेजों के भारत आगमन के बाद से शुरू होता है। इसमें ज्ञान, विज्ञान, साहित्य, संस्कृति के क्षेत्र में हमें काफी हद तक अंग्रेज तथा अंग्रेजियत तक सीमित कर दिया। 16 आजादी के बाद भी शिक्षा का स्वरूप वहीं रहा, लेकिन बाद में चिंतकों ने उस पर गहराई से सोचा। स्वयं गाँधी जी ने भी कभी बुनियादी शिक्षा का महत्व समझाया था, पर वह गाँधी जी के साथ दफन हो गया। हमारी स्थिति बड़ी गड़बड़ थी। हमारे देश में यूँ तो अध्यात्म और दर्शन पर काफी काम हुआ लेकिन आधुनिक विज्ञान, जिसके बिना हम एक कदम भी आगे नहीं बढे सके, इसके लिये दूसरे पर ही आश्रित रहना पड़ा। यह स्थिति हमें और भी कुंठित करती है और अपनी रही-सही अध्यात्म दर्षन और मिथकों की पूंजी को सब पर फैलाना चाहती है। हमारा पराजित मन यह स्वीकार नहीं

www.ignited.in

कर पाता कि इनमें काफी चीजें मील के गुजरे पत्थरों की तरह काफी पीछे छूट चुकी है और ये आगे बढने का कोई भरोसेमंद साधन नहीं है। इसी का फल है कि हम ज्योतिष , अध्यात्म दर्शन और मिथक को नवीनतम सच्चाइयों में जोड़ने का हट ठानते हैं। जबकि इसके लिये एक स्वायत्त समिति ही पर्याप्त है कि इनमें से कितनी चीजें उपयोगी हैं और कितनी त्याज्य।

कम्प्यूटर और इंटरनेट से विश्व के सारे ज्ञान को हमें सुलभ करा रखा है, भले ही हमारा गरीब देश और इसकी बदहाल आबादी इसका लाभ उठाने और अपने हितों के अनुरूपढलने में असमर्थ है , विरोधाभाष यह है कि एक ओर तो हम इंटरनेट के लिये आगे कदम बढाते हैं तो दूसरी ओर अपने अंधविष्वास को सत्य सिद्ध करने के पीछे पड़े हैं। वर्तमान शिक्षा का स्वरूप क्या हो कि हमारे भविष्य की पीडियां दुनियां के साथ ताल में ताल मिलाकर चल सकें।

वर्तमान शिक्षा की अनुपयुक्तता एवं शिक्षित बेरोजगारों की बढी जनसंख्या तथा पारिवारिक स्तर पर आर्थिक दयनीयता, विश्व के अन्य विकसित देशों के समान भारत के भी माध्यमिक शिक्षा स्तर से ही 17 व्यवसायिक षिक्षा को अनिवार्य विषय बना देना चाहिए। शिक्षा का लक्ष्य केवल आधारभूत कौशल का विकास करना नहीं होना चाहिये, वरन आधारभूत वैज्ञानिकता प्रदान करना भी होना चाहिए। शिक्षा का संगठन इस प्रकार किया जाना चाहिए कि व्यक्ति अपनी शिक्षा को उस समय तक जारी रख सके जब तक उसकी कुशलताओं का पूर्णतयः विकास संभव न हो जाय। व्यवसायिक शिक्षा के समस्त कार्यक्रमों में सामान्य , वैज्ञानिक एवं विशिष्ट विषयों में समुचित संतुलन होना चाहिए क्योंकि प्रो 0 हुमायूँ कबीर ने कहा है , “विज्ञान और प्रौद्योगिकी तथा व्यवसायिक षिक्षा से ही किसी देष की उन्नति हो सकती है।“

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा के उद्धेश्य

- **शारीरिक विकास** - महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन के अनुसार छात्रों को शारीरिक शिक्षा भी प्रदान की जानी चाहिए। शिक्षा ऐसी होनी चाहिए जिससे बालक के शरीर का विकास होना चाहिए क्योंकि उनके अनुसार स्वस्थ शरीर मे ही स्वस्थ मस्तिष्क का निर्माण होता है इसीलिए सबसे पहले उन्होंने शारीरिक विकास पर बल दिया।
- **मानसिक एवं बौद्धिक विकास** - गाँधी जी के अनुसार जिस प्रकार शारीरिक विकास के लिए शिशु को माँ के दूध की आवश्यकता होती है उसी प्रकार मानसिक विकास के लिए शिक्षा की आवश्यकता है।
- **व्यक्तिगत एवं सामाजिक विकास -** गाँधी जी व्यक्ति,समाज और राष्ट के विकास पर बल देते है सामाजिक विकास से तात्पर्य मनुष्य को समाज मे प्रेम और मानव मात्र की सेवा करने से ही आत्मिक विकास संभव हैं।
- **सांस्कृतिक विकास** - गांधी जी आत्मिक विकास के लिए संस्कृति के ज्ञान की आवश्यकता पर विशेष बल देते थे उनके अनुसार शिक्षा दर्शन में संस्कृति के अहम भूमिका होती हैं।
- **नैतिक एवं चारित्रिक विकास** - गांधी जी शिक्षा के माध्यम से बालक में सत्य ,अहिंसा, ब्रहमचर्य, अस्वाद, अपरिग्रह ओर निर्भरता आदि गुणों का विकास होना चाहिए।
- **व्यावसायिक विकास-** गांधी जी आर्थिक विकास अभाव की मुक्ति के लिए व्यावसायिक शिक्षा पर बल देते थे और मनुष्य को आत्मनिर्भर बनाना चाहते है इसीलिए वह हस्तकला ओर उद्योग पर बल देते है
- **आध्यात्मिक विकास** - गांधी जी मनुष्य जीवन का अंतिम उद्धेश्य मुक्ति आत्मानुभूति व आत्मबोध मानते हैं। गाँधी जी ने ज्ञान कर्म भक्ति और योग पर समान बल देते है यह अहिंसा और सत्याग्रह को मूर्त रूप प्रदान करते हैं।
- **पाठ्यक्रम** - बेसिक शिक्षा 1 से 8 तक इसमे हस्तकला , उद्योग , को प्रमुख स्थान मातृभाषा व्यावहारिक गणित , सामाजिक विषय , सामान्य विज्ञान , संगीत चित्रकला , स्वास्थ्य विज्ञान और आचरण की शिक्षा पर बल देते हैं।

गाँधी जी केवल साक्षरता को शिक्षा नहीं मानते थे। इनके अपने शब्दों में साक्षरता न तो शिक्षा का अन्त है और न प्रारम्भ। यह केवल एक साधन है जिसके द्वारा पुरुष और स्त्रियों को शिक्षित किया जा सकता है (Literacy is not the end of education nor even the begining- It is only one of the means whereby men and women can be educated) । गाँधी जी मनुष्य को शरीर, मन, हृदय और आत्मा का योग मानते थे। इनका स्पष्ट मत था कि शिक्षा को मनुष्य के शरीर , मन, हृदय और आत्मा का विकास करना चाहिए। इनके अपने शब्दों

www.ignited.in

में शिक्षा से मेरा अभिप्राय बालक और मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा के उच्चतम विकास से है।

महात्मा गाँधी का शिक्षा दर्शन

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी केवल राजनैतिक नेता ही नहीं थे अपितु एक बहृत बडे धर्म मर्मज्ञ एवं समाज सुधारक भी थे। इन्होंने अपने समय की पुस्तकीय, सैद्धान्तिक, संकुचित और परीक्षा प्रधान शिक्षा में सुधार के लिए भी अनेक सुझाव दिये थे। शिक्षा जगत में ये शिक्षाशास्त्री के रूप में प्रतिष्ठित है। गाँधी जी शिक्षा को व्यक्ति का जन्मसिद्व अधिकार मानते थे और मनुष्य की किसी भी प्रकार की , भौतिक अथवा आध्यात्मिक उन्नति के लिए इसे इतना ही आवश्यक मानते थे जितना बच्चे के शारीरिक विकास के लिए माँ का दूध। यही कारण है कि इन्होंने एक निश्चित आयु तक के बच्चों के लिए सामान्य शिक्षा की व्यवस्था अनिवार्य रूप से करने पर बल दिया और उसे निःशुल्क करने की बात कही। इनका स्पष्ट मत था कि यह शिक्षा विदेशी भाषा अंग्रेजी के माध्यम से नहीं दी जा सकती यह शिक्षा मातृभाषा के माध्यम से ही दी जा सकती है। वैसे भी ये अंग्रेजी को मानसिक दासता बढ़ाने वाली भाषा मानते थे। ये शिक्षा द्वारा मनुष्य को स्वावलम्बी बनाना चाहते थे , उसे अपनी रोजी-रोटी कमाने योग्य बनाना चाहते थे , इसलिए इन्होंने हस्तकौशलों की शिक्षा पर विशेष बल दिया। साथ ही ये मनुष्य की आत्मिक उन्नति भी करना चाहते थे , इसलिए इन्होंने शिक्षा द्वारा मनुष्य को एकादश व्रत सत्य , अहिंसा, ब्रहमचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्प्रश्यता निवारण, कायिक श्रम , सर्वधर्म समभाव और (विनम्रता) पालन की ओर प्रवृत्त करने पर बल दिया। गाँधी जी ने अपने इस शिक्षा दर्शन के आधार पर राष्ट्रीय शिक्षा का स्वरूप निश्चित किया और उसे बेसिक शिक्षा का नाम दिया। यहाँ गाँधी जी के शैक्षिक विचारों का क्रमबद्व विवेचन प्रस्तुत है।

गाँधी जी के शैक्षिक सिद्धान्तों की वर्तमान भारत में उपयोगिता

गाँधी जी के शैक्षिक सिद्धान्तों की वर्तमान भारत की समस्याओं के लिए उपयोगिता उनकी बुनियादी शिक्षा के उद्देश्यों के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है-

- **भारतीय परिस्थितियों के लिए उपयोगी**- गाँधी जी ऐसी शिक्षा की व्यवस्था करना चाहते थे जो भारतीय परिस्थितियों में उपयोगी हो, जो बालकों का स्वाभाविक रूप से विकास कर सके तथा भारत की प्रगति की दृष्टि से लाभदायक हो ।
- **बालकों का सर्वांगीण विकास-** गाँधी जी के शैक्षिक सिद्वान्तों पर आधारित बुनियादी शिक्षा का उद्देश्य बालकों का सर्वांगीण विकास करना था। इस दृष्टि से बुनियादी शिक्षा की योजना इस प्रकार बनायी गई थी कि बालकों का शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, शैक्षिक तथा आर्थिक विकास किया जा सके।
- **अच्छी नागरिकता का विकास-** बुनियादी शिक्षा बालकों में अच्छी नागरिकता का विकास करने में महत्त्वपूर्ण थी। आज के बालक कल के श्रेष्ठ नागरिक तभी बन सकते हैं जब उनमें प्रेम , धैर्य, सद्भाव, सहनशीलता, परोपकार, सत्यनिष्ठा तथा सदाचार इत्यादि लोकतान्त्रिक मूल्यों के प्रति गहरी निष्ठा हो । गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा बालकों में ऐसे मूल्यों का विकास करने में सक्षम थी।
- **सर्वोदय की भावना का विकास-** गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा की अवधारणा छात्रों में उन् गुणों का संचार करने के लिए बनाई गई थी , जिनके द्वारा छात्र केवल अपनी ही उन्नति के प्रति सजग न रह कर पूरे समाज की उन्नति की भावना से ओत-प्रोत रहें। सामाजिक उत्थान के लिए सर्वोदय की भावना का विकास आवश्यक है।
- **नैतिक, चारित्रिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों का विकास-** बुनियादी शिक्षा के द्वारा गाँधी जी छात्रों का भारतीय मूल्यों और आदर्शों के अनुसार नैतिक , चारित्रिक एवं सांस्कृतिक विकास करना चाहते थे। यही कारण है कि उन्होंने पाठ्यक्रम में महान पुरुषों , वैज्ञानिकों, अन्वेषकों की जीवनियों को सम्मिलित किया था।

- **आर्थिक निर्भरता-** आर्थिक निर्भरता वर्तमान भारत की सबसे गम्भीर आवश्यकता है। आज बेरोजगारी का प्रकोप विकराल रूप ले चुका है। सरकार स्वार्थ के वशीभूत होकर इस दिशा में गम्भीर नहीं दिखती उस पर आरक्षण जैसे प्रावधान योग्य एवं कुशल युवाओं में कुण्ठा उत्पन्न कर रहे हैं। ऐसे में गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा छात्रों की स्वावलम्बी , आत्मविश्वासी एवं आत्म-निर्भर बनाकर बेरोजगारी की गम्भीर समस्या का समाधान कर सकती है। गाँधी जी की बुनियादी शिक्षा में हस्त-कौशलों, काष्ठ, चमड़ा, कृषि, चीनी मिट्टी के बर्तन , मछली पालन , मधु मक्खी पालन इत्यादि लघु कुटीर उद्योगों की शिक्षा सम्मिलित थी, जो छात्रों को स्वावलम्बी बनाती थी।

www.ignited.in

गाँधी जी के शैक्षिक चिंतन

युगपुरुष राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने भारत को आजाद कराने में ही अपना योगदान नहीं दिया बल्कि उन्होंने एक दूरदर्शी शिक्षा वृत्त के रूप में कर्तव्य एवं कर्म आधारित मूल्य वादी दृष्टिकोण से एक नई शिक्षा योजना की रूप रेखा प्रस्तुत किये उनके द्वारा चलाया गया शिक्षा योजना को बेसिक शिक्षा योजना वर्धा योजना आधारभूत योजना के नाम से जाना जाता है गांधी जी ने शिक्षा को एक व्यापक प्रक्रिया मानते थे वस्तुतः शिक्षा वह है जो व्यक्ति नीहित सभी पक्षों का बहुमुखी विकास करती हैं उनका मानना था कि शरीर मन , हृदय और आत्मा के योग से मानव का विकास होता है। उनका मानना था कि शिक्षा से मनुष्य के शरीर, मन और आत्मा का सर्वोत्तम विकास होता है।

गाँधी जी के अनुसार शिक्षा के उद्देश्य

गाँधी जी का उद्देश्य शिक्षा के क्षेत्र में आदर्शवादी और प्रयोगवाद था आदर्शवादी के दृष्टिकोण के अनुरूप गाँधी सर्वोच्च उद्देश्य के रूप में आत्मबोध कराना शिक्षा का प्रधान उद्देश्य मानते थे उनका मानना था कि आत्मा का प्रक्षेपण अपने आप में महत्व रखता है। गाँधी जी ने शिक्षा के द्वारा आत्मा चरित्र निर्माण और ईश्वरीय ज्ञान की ओर बढ़ने की आस्था रखते थे। आत्मबोध के उद्देश्य से जीवन में चरम लक्ष्य मॉल की प्राप्ति कर सकता है। प्रयोगवादी विचारधारा के अनुकूल गाँधीजी शिक्षा के तत्कालीन उद्देश्य वाह है जो किसी भी देशकाल परिस्थिति में महत्व रखता है उद्देश्यों के अंतर्गत महात्मा गांधी के निम्न उद्देश्य हैं।

१. चरित्र निर्माणः

शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य चरित्र का निर्माण होना चाहिए। जिस बच्चे में चरित्र का निर्माण न हो सके वहां शिक्षा का उद्देश्य असफल हो जाता है। शिक्षा एक बोझ नहीं है बल्कि इसके द्वारा हम अपने जीवन को एक नई दिशा दे सकते हैं। अपने अंदर के आत्मबल को बढ़ा सकते हैं अपने आप में आत्मा विश्वास जगा सकते हैं।

जीविकोपार्जन की क्षमताः शिक्षा केवल चरित्र निर्माण के लिए ही नहीं बल्कि अपने जीविकोपार्जन की क्षमता को बढ़ाने में भी मदद करती हैं। शिक्षा के बिना हम जीविकोपार्जन का सही दिशा ढूंढने में असफल होते हैं। शिक्षा ही एक ऐसा धन है जो हमारे जीवन को हर प्रकार की कठिनाइयों से बचाता है और अपने जीवन को एक बेहतर जीवन बनाने में मदद करता है।

सांस्कृतिक विकासः प्राचीन काल के सांस्कृतिक या रीति रिवाज आज के आधुनिक युग में देखने को नहीं मिलते हैं शिक्षा ही एक ऐसा माध्यम है जो हम अपने सांस्कृतिक को बनाए रख सकते हैं और इसका विकास कर सकते हैं।

संगतिपूर्ण विकास: शिक्षा का एक उद्देश्य यहां पर होना चाहिए कि बालक में संगति का विकास हो सके। उनमें ऐसी भावना घर ना बनाएं जो दूसरों को कष्ट दे बल्कि उनमें संगति की ऐसी भावना हो कि वे देश एवं अपने आस पड़ोस के महलों को समझ सके।

व्यक्तिगत और सामाजिक उद्देश्यः शिक्षा का प्रमुख उद्देश्य बालक को एक बेहतर जीवन प्रदान करना है ताकि वे अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक मामलों में भी बढ़-चढ़कर हिस्सा ले सकें और अपने तथा समाज के बेहतर भविष्य के लिए आगे बढ़ सके। अगर ऐसा ना हो तो शिक्षा का का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता।

निष्कर्ष

गाँधीजी के जीवन-दर्शन के जीवन दर्षन तथा शिक्षा-दर्शन का क्षेत्र इतना व्यापक तथा गहन-गंभीर एवं सूक्ष्म है कि उस पर निर्धारित निष्कर्षों को शब्दों की सीमाओं में बांधना सरल कार्य नहीं है। यह मान लेना कि प्रस्तुत शोध के माध्यम से गाँधीजी के षिक्षा-दर्षन की सम्पूर्णता में प्रवेष किया जा चुका है केवल मिथ्या अहंकार होगा। फिर भी सीमाओं में रहते हुए जो कुछ विवेचन किया जा सका उसके आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत किये जा रहे है। नये संदर्भों से तात्पर्य देष की उन स्थितियों , परिस्थितियों से है जो दोनों मनीषियों के जीवनकाल अथवा यों कहा जाये कि गाँधी जी के दक्षिण अफ्रीका और भारत के सार्वजनिक जीवन के बाद आज परिवर्तित अथवा अपरिवर्तित रूप में विद्यमान है। इनमें वे स्थितियां और परिस्थितियां भी है जो गाँधीजी और टैगोर जी के समय में इस देष में नहीं थीं या अल्प रूप में थी जैसे दूषित वातावरण, जल, खाद्य पदार्थों आदि का प्रदूषण, आणविक और अन्य विध्वंसक शास्त्रास्त्रों की व्यापक विभीषिका।

शिक्षा-दर्शन कोई विषय या 'डिसिप्लिन' है अथवा व्यवस्थित ज्ञानपुंज है इस प्रकरण पर अध्ययन तथा विचार करने के पश्चात् यह स्पष्ट हो जाता है कि शिक्षा-दर्षन एक 'डिसिप्लिन' है जिससे षिक्षा के उद्देष्यों , पाठ्यक्रम, शिक्षणविधि, मूल्यांकन, शैक्षिक प्रषासन एवं संगठन, शैक्षिक विकल्पों के चयन , शैक्षिक साधनों की उपयोगिता आदि में नैतिक मूल्यों के निर्धारण और

तदनुसार कार्य करने में सहायता मिलती है। शिक्षा-दर्शन एक बहुविषयक 'डिसिप्लिन' है जिसमें मनोविज्ञान , समाजशास्त्र, अर्थशास्त्र, नीतिशास्त्र, राजनीतिशास्त्र आदि का प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त शिक्षा-दर्शन शिक्षण के विषयों जैसे इतिहास, गणित, विज्ञान आदि के दर्शन में भी प्रवेश करता है। शिक्षा-दर्शन शिक्षा के क्षेत्र में प्रचलित अनेक प्रत्ययों को स्पष्ट करने में सहायक होता है। इसमें 'थ्यौरी आफ नालेज' या 'एपिस्टेमौलाजी' से विशेष सहायता मिलती है।

गाँधीजी के चिन्तन पर दर्शन पर पाश्चात्य विचारकों एवं ग्रंथों का प्रभाव पड़ा। इनमें सर्वप्रथम ईसा मसीह और बाइबिल उल्लेखनीय है। 'बुराई का बुराई से प्रतिरोध मत करो। जो एक गाल पर तमाचा मारे उसके सामने दूसरा गाल भी कर दो। अमीर आदमी ईश्वर के राज्य में प्रवेश नहीं करेगा। किसी से डरो मत क्योंकि कोई शरीर को मार सकता है लेकिन आत्मा को नहीं। मनुष्य केवल रोटी के लिए नहीं जीता है। तुम अपने पड़ोसी को वैसे ही प्यार करोे जैसे स्वयं को करते हो। भगवान के राज्य में बच्चा सबसे महान् है। जो इसे कष्ट पहुंचाए, अच्छा हो यदि उसके गले में पत्थर बांधकर उसे डुबो दिया जाय। ये सब विचार ऐसे थे जिन्होंने गाँधी जी को प्रभावित किया। ईसा के अपने विचारों हेतु किये गये बलिदान में भी गाँधी जी को प्रभावित किया। टैगोर जी ने भी बच्चे को सर्वोपरि माना है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

ई0जे0 थाम्पसन - रवीन्द्र नाथ टैगोर हिज लाइफ एंड वर्क , कलकत्ता, 1921 एण्ड रवीन्द्र नाथ टैगोर पोस्ट एण्ड डेªमेटिस्ट, ऑक्सफोर्ड, 1926 संशोधित संस्करण 1948.

डॉ0 एस0एस0 माथुर - शिक्षा के दार्षनिक एवं सामाजिक आधार, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा-3, द्वितीय संस्करण-1997

डॉ0 श्रीमती लक्ष्मी सक्सेना डॉ0 श्रीमती लक्ष्मी सक्सेना डॉ0 श्रीमती लक्ष्मी सक्सेना - समकालीन भारतीय दर्षन , उत्तर प्रदेष हिन्दी संस्थान, लखनऊ, प्रथम संस्करण-1974

रामश्कल पाण्डेय - शिक्षा दर्शन , विनोद पुस्तक मन्दिर , आगरा-3, 1998

बाकेलाल सिंह - शिक्षा के आधार भूत सिद्धान्त , साहित्य सेवा शिविर लाइन बाजार जौनपुर, प्रथम संस्करण-1968

लक्ष्मी नारायण गुप्ता- महान पाश्चात्य एवं भारतीय शिक्षा शास्त्री कैलाश प्रकाशन मन्दिर 16 विवेकानन्द मार्ग , इलाहाबाद-3 संस्करण-1978

शर्मा डॉ0 रामनाथ शर्मा डॉ 0 रामनाथ - भारतीय शिक्षा दर्शन, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा प्रथम संस्करण-1917

आत्मानन्द मिश्र आत्मानन्द मिश्र - भारतीय शिक्षा के प्रवर्तक, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा।

रमन बिहारी लाल - शिक्षा के दार्षनिक और समाज शास्त्रीय सिद्धान्त।

मूर्ती, श्रीनिवास महात्मा गाँधी और लियो टालस्टाय के पत्र लांग बीच प्रकाशन: लांग बीच, १९८७ पीपी १३

Corresponding Author

Amit Kumar Yadav*

Research Scholar, Lords University, Alwar (Rajasthan)

www.ignited.in